जनसंदेश
4.6.19

पांडुलिपियों का उद्धार ग्रंथ संपादन से संभव

वाराणसी। पाण्डुलिपियों के सम्पादन पद्धति पर अनेक विद्वानों के भिन्न भिन्न मत स्थापित किये गये हैं। उनका सम्यक पयालीचन करने के उपरान्त ही सम्पादन कार्य करना चाहिए। विद्वान वक्ता ने कहा कि जब तक असन्तोष नहीं होता तब तक सटीक सम्पादन नहीं होगा और जब तक सन्तोष नहीं होता तब तक सम्यक अध्ययन नहीं होगा। अतः सम्पादन कार्य में सन्देह होना आवश्यक है तभी हम सम्यक विचारणा से मूल पाठ का उद्धार कर सकते हैं।

यह बातें सोमवार को अध्यक्षीय उद्बोधन में धर्मशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान प्रोफेसर ब्रज किशोर स्वाइं ने कही। वह सोमवार को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी एवं पाश्र्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में सोमवार को आयोजित 'शास्त्र अध्ययन, सम्पादन एवं सम्पादन प्रविधि पर अधारित' उच्चतस्तरीय पाण्डु लिपिविज्ञान कार्यशाला का उद्घाटन सोमवार को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सभागार में संबोधित कर रहे थे।

शुभारंभ

पार्श्वनाथ विद्यापीठ में बोले प्रो.ब्रज किशोर स्वाइ

'शास्त्र अध्ययन, सम्पादन एवं सम्पादन प्रविधि पर अधारित' कार्यशाला

उच्चतस्तरीय पाण्डु लिपि विज्ञान कार्यशाला में देश के भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयों से कुल 27 प्रतिभागी

दिग्गजों ने बतायी महत्वपूर्ण बातें

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि न्यायशास्त्र के ख्यातिलब्ध विद्वान प्रो.राजाराम शुक्ल ने कार्यशाला की उपलब्धि, प्रासङ्गिता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की सारस्वत अतिथि महात्मागांधी काशी विद्यापीठ के मानविकी संकाय की संकाय प्रमुख एवं संस्कृत विभाग की अध्यक्षा प्रोफेसर उमारानी त्रिपाठी जी ने केन्द्र द्वारा पाण्डुलिपि के क्षेत्र में किये जा रहे उल्लेखनीय प्रयास की सराहना की। इस सारस्वत अनुष्ठान में प्रोफसर कृष्णकान्त शर्मा, प्रो.सदाशिव कुमार द्विवेदी, प्रोफेसर जयशंकर लाल त्रिपाठी, डा.रमानन्द तिवारी, प्रो.मारुति नन्दन प्रसाद तिवारी, डा.श्रीप्रकाश पाण्डेय, आदि अनेक सुधी जन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ रजनीकान्त त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन पाश्वनाथ विद्यापीठ के संयुक्त निदेशक डा.श्रीप्रकाश पाण्डेय ने की।

अमर उजाला
4.6.2019

पांडुलिपियों के संरक्षण के लिए आगे आना होगा

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र एवं पार्श्वनाथ विद्यापीठ के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय पांडुलिपि विज्ञान कार्यशाला का शुभारंभ सोमवार को करौंदी स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के क्षेत्रीय केंद्र पर हुआ। शास्त्र अध्ययन, संपादन एवं संपादन प्रविधि पर आधारित कार्यशाला के मुख्य अतिथि संपूर्णानंद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजाराम शुक्ल व काशी विद्यापीठ संस्कृत विभाग के अध्यक्ष उमारानी त्रिपाठी रहे। अध्यक्षता श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रो. बृज किशोर स्वाई ने की।

मुख्य अतिथि प्रो. राजाराम शुक्ल ने कार्यशाला की उपलब्धि, प्रासंगिकता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नवीन ग्रंथ की अपेक्षा किसी भी पांडुलिपि का संपादन अत्यंत ही कठिन कार्य है। इस दौरान डॉ. रजनीकांत त्रिपाठी, डॉ. श्रीप्रकाश पांडेय, डॉ. विजय शंकर शुक्ल, प्रो. कृष्णकांत शर्मा आदि मौजूद रहे।

जनसंदेश टाइम्स
वाराणसी, बुधवार 3 जुलाई, 2019

पाठ सम्पादन सिद्धान्त को किया आत्मसात

आयोजन

कार्यशाला में देश के कई विश्वविद्यालयों से कुल 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया

वाराणसी। कार्यशाला का प्रारूप प्राचीन शिक्षा पद्धति के अनुसार तैयार की गयी। यहां गुरुकुल की तरह प्रतिभागियों ने शास्त्राध्ययन किया और पाठ सम्पादन सिद्धान्त को आत्मसात किया। यह बातें अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान प्रो.वशिष्ठ त्रिपाठी ने कही। वह मंगलवार को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी एवं पार्श्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित कार्यशाला के समापन पर संबोधित कर रहे थे। 'शास्त्र अध्ययन, सम्पादन एवं सम्पादन प्रविधि पर अधारित' उच्चतस्तरीय पाण्डु लिपि विज्ञान कार्यशाला का समापन सत्र मंगलवार को कला केन्द्र के सभागार में किया गया। कार्यशाला में देश के कई विश्वविद्यालयों से कुल 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विषय विशेषज्ञ के रूप में देश के भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयों से लगभग 16 विशिष्ट विद्वानें द्वारा 30 व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर इस सारस्वत अनुष्ठान में प्रो.डीपी शर्मा, प्रो.सदाशिव कुमार द्विवेदी, प्रो.प्रद्युम्न शाह, डा. रमानन्द तिवारी, प्रो.चन्द्र भूषण झा, डा.श्रीप्रकाश पाण्डेय, डा.अनूप तिवारी, आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डा.रजनीकान्त त्रिपाठी ने किया ।

"जो ज्ञान आप लोग अर्जित किये हैं उनको व्यवहार में लाने की आवश्यकता है नही तो इसकी सार्थकता सिद्ध नहीं होगी। विषय से सम्बन्धित पाण्डुलिपियों का संग्रह कर मिले ज्ञान का उपयोग करना चाहिए।

प्रो. जयशंकर लाल त्रिपाठी

"भट्मीमांसक कमलाकर भट्ट के पिता थे प्रतापमार्तण्डकार श्री रामकृष्ण भट्ट। रामकृष्ण भट्ट काशी के थे किन्तु वे उत्कल के राजा प्रतापरुद्रदेव के सभापण्डित थे। उन्होंने राजा प्रतापरुद्रदेव के नाम से ग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ में उत्कलीय परम्परा एवं काशी के परम्परा का स्पष्ट झलक दिखाई देता है। इसका प्रकाशन न केवल भारत अपितु विश्वजनमानस के लिए अत्यन्त ही आवश्यक है।

प्रो. ब्रज किशोर स्वाई

विविध पक्षों पर दिया गया प्रशिक्षण

कार्यशाला में मुख्य रूप से 'शास्त्र अध्ययन, सम्पादन एवं सम्पादन प्रविधि को आधार बना कर धर्मशास्त्र के अप्रकाशित ग्रन्थ प्रतामार्तण्ड का, विषय विशेषज्ञ प्रो.ब्रज किशोर स्वाइं मार्गदर्शन में प्रतिभागियों द्वारा सम्पादन कार्य किया गया। इस एक माह की अवधि में भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इनस्टिट्यूट, पूणे , एशियाटिक सोसाइटी कोलकाता, सरस्वती भवन पुस्तकालय, वाराणसी से संगृहीत प्रतापमार्तण्ड के पांच पाण्डुलिपियों के आधार पर विषय विशेषज्ञ प्रो.ब्रज किशोर स्वाई की मार्गदर्शन से प्रतिभागियों द्वारा कोलेसन चार्ट बनाना, उनका कम्पेयर करना, पाठ निर्धारण, पाठ निर्णय, आदि कार्य सम्पन्न किया गया।